Eklavya University
Damoh (M.P.)

Bachelor of Arts

(B.A. Semester – I&II)

Sanskrit

Curriculum

(2023-2024)

Bachelor of Arts - B.A. Sanskrit Semester I&II

VISION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

एकलव्य विश्वविद्यालय सीखने के माध्यम से जीवन और समाज के उन्नयन हेतु संकल्पित है।

MISSION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

- मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा आदर्श जीवन, आजीविका और उद्योग को पोषित करना।
- अनुसंधान और विषय के गूढ़ ज्ञान हेतु शिक्षा को व्यावहारिक बनाना।
- सामाजिक एवं तकनीकी कौशल के माध्यम से छात्रों को रोजगार हेतु तैयार करना।
- पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली में निहित ज्ञान की समग्र शिक्षा प्रदान कर छात्रों को उन्नत जीवन एवं रोजगार के लिए तैयार करना।
- अनुसंधान और रचनात्मक परीक्षण के माध्यम से ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- शिक्षा; अनुसंधान और नवाचारों में उत्कृष्टता एवं प्रबंधन के लिए प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में लाना।
- छात्रों में व्यवहारिक एवं नैतिक शिक्षा के माध्यम से समस्या समाधान कौशल, सामुदायिक नेतृत्व कौशल एवं सामूहिक सामाजिक सेवा कार्य के लिए प्रतिबद्ध करना।
- समान अवसर एवं रोजगार को दृष्टि में रखकर छात्रों को आर्थिक सशक्तीकरण की ओर अग्रसर करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के माध्यम से व्यक्ति की जीवन शैली और पद्धति को समुन्नत करना।

VISION STATEMENT OF DEPARTMENT

- शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के द्वारा मानव जीवन को उन्नत करने हेतु समर्पित।

MISSION STATEMENT OF DEPARTMENT

- संस्कृत भाषा की शिक्षा में उत्कृष्टता एवं विविधता में वृद्धि करना।
- संस्कृत के प्राचीन, मध्यकालीन और अन्य ज्ञान स्रोतों को सभी के लिए सुलभ कराना।
- संस्कृत एवं प्राच्य विद्याओं को समयानुकूलन के साथ प्रासंगिक बनाना।

PROGRAMME EDUCATIONAL OBJECTIVES (PEOs)

- संस्कृत विषय में स्नातक (बी.ए./शास्त्री) के उपरान्त छात्रों को संस्कृत साहित्य में विशिष्ट अध्ययन एवं शोध के लिए अवसर प्राप्त होंगे।
- संस्कृत भाषा के विशिष्ट ज्ञान से महत्वपूर्ण एवं तुलनात्मक शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।
- संस्कृत भाषा में किया गया अध्ययन एवं स्वयं के द्वारा किये गए शोध – अन्वेषण से स्वयं के बौद्धिक स्तर को राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय और सामाजिक – आध्यात्मिक पटल पर स्थापित कर सकेगा।

PROGRAMME OUTCOMES (POs)

- संस्कृत भाषा में स्नातक (बी.ए./शास्त्री) अध्ययन से छात्रों में समाज, संस्कृति, इतिहास, धर्म, दर्शन, विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान अर्जित कर सामाजिक एवं मानव समस्याओं के समाधान करने हेतु संवेदनशीलता तथा समझ विकसित होगी।
- संस्कृत भाषा में स्नातक होने से छात्रों में सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक वैचारिक और दार्शनिक परंपरा तथा उनसे संबंधित विषयों की सोच विकसित एवं पल्लवित होगी।
- यह कार्यकम छात्रों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने एवं शोध कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा।
- संस्कृत भाषा में स्नातक करने के उपरान्त छात्र एम.ए. एम.फिल, पी–एच.डी. आदि उपाधियां प्राप्त कर उस ज्ञान से विशिष्ट मुद्दों का समाधान एवं नवाचार कर सकेगें।
- संस्कृत भाषा में स्नातक अध्ययन से छात्रों में वेद, पुराण, आगम, काव्य, नाट्यशास्त्र, व्याकरण, पाण्डुलिपि–पुरालिपि एवं संस्कृत की सभी विधाओं के साहित्य के पठन–पाठन, सम्भाषण एवं संपादन कला का विकास होगा।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PSOs)

- संस्कृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करना।
- संस्कृत भाषा के साथ पालि और प्राकृत भाषा में रचित ग्रन्थों एवं आगम ग्रन्थों को समझना।
- संस्कृत व्याकरण, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य का विशिष्ट अध्ययन करना।
- प्राचीन भारतीय दर्शन– चार्वाक, जैन, बौद्ध एवं सांख्यादि षड्दर्शनों के विभिन्न पक्षों में शिक्षण और अनुसंधान के लिए दक्षता और कौशल का विकास करना।
- संस्कृत भाषा में सम्भाषण कौशल, ग्रन्थ संपादन कौशल, लेखन–वाचन–श्रवण आदि विधाओं में पारंगत होना।

Course code	Ved and Vyakaran (Paper –1)/Major/Minor	L	T	P	C
23AISANSIT	वेद और व्याकरण (प्रश्न पत्र – 1)/मेजर/माईनर	06	0	0	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			

Semester – I

Level - 05

Course Objectives: (CO)

1. विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
2. विश्व की धरोहर के रूप में घोषित ऋग्वेद सहित संपूर्ण वैदिक साहित्य की ज्ञान महिमा से छात्र लाभान्वित होंगे।
3. व्याकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा साहित्य की संरचना की समझ में सहायक होगा।
4. छात्र में संस्कृत लेखन और अनुवाद की कला का विकास होगा।

Course Learning Outcome: (CLO)

1. संस्कृत भाषा की विशेषताओं का ज्ञान करना।
2. छात्रों को प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलेगी।
3. प्राचीन देवताओं और यज्ञ विधाओं से छात्र सुपरिचित हो सकेगा।
4. पृथ्वी की महिमा से अवगत होकर छात्र में पृथ्वी माता के प्रति समर्पण की भावना विकसित होगी।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. छात्र के धार्मिक और आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगा।
2. वाक्य निर्माण व प्रयोग का ज्ञान होगा।
3. संस्कृत भाषा में अनुवाद कला एवं सम्भाषण कौशल का विकास होगा।
4. छात्रों में भाषा कौशल एवं अनुकूलन की सोच विकसित होगी।

Unit – 1 वेदों का परिचय — **15**

1. संस्कृत भाषा का परिचय : संस्कृत भाषा का स्वरूप एवं महत्त्व वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत का परिचय एवं विशिष्टताएं।
2. वेद : स्वरूप, लक्षण, भेद, अपौरूषेयता, रचनाकाल।
3. वैदिक साहित्य : संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्गों का सामान्य परिचय।
4. प्रसिद्ध वेद भाष्यकारों का परिचय : सायण, महीधर, उब्बट, दयानंद सरस्वती।

Unit – 2 वैदिक सूक्त : व्याख्या, समीक्षा एवं व्याकरणिक टिप्पणियां। — **15**

1. ऋग्वेद – अग्निसूक्त 1.1।
2. यजुर्वेद – शिवसंकल्प सूक्त XXXIV ।
3. अथर्ववेद– पृथ्वी सूक्त – काण्ड – 12, सूक्त –1 (1–5 मंत्र)।

Unit – 3 शब्दरूप, धातुरूप एवं लकार — **15**

1. शब्दरूप – राम, कवि, भानु, पितृ, लता, नदी, वधू, मातृ, फल, वारि, आत्मन्, वाक्, सर्व, तत्, यत्, इदम, अस्मत् तथा युष्मत्।
2. धातुरूप – पठ्, भू, कृ, अस्, रूध्, क्री, चुर् तथा सेव्।
3. लकार परिचय – (केवल पांच लकार) लट्, लोट्, विधिलिङ्, लङ्, एवं लृट्।

Unit - 4	15
लघुसिद्धान्तकौमुदी / कातंत्र व्याकरण (संज्ञा, सन्धि एवं विभक्ति प्रकरण) सूत्रों की व्याख्या एवं प्रयोग	
Unit – 5 संस्कृत सम्भाषण एवं अनुवाद कौशल	15
(अ) संस्कृत सम्भाषण 1. संस्कृत सम्भाषण : आत्मपरिचय, विभक्ति प्रयोग, सर्वनाम शब्दों का प्रयोग (तत्,एतत्,किम् यत् – तीनों लिङ्गो एवं तीनों वचनों में) । अव्यय प्रयोग (अत्र, यत्र–तत्र,कुत्र,सर्वत्र,अन्यत्र,एकत्र,आम्न,अद्य, श्वः,ह्यः परश्वः परह्यः, इदानीम्, पुरतः पृष्ठतः, वामतः,दक्षिणतः, उपरि, अधः, सम्यक् अपि च, अतः एवम्, इति, यदि–तर्हि, यथा–तथा, यदा–तदा, कदा, कति, किम्, कुतः कथम्, किमर्थम्, खलु। 2. कृदन्त प्रत्यय – क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु – प्रत्ययों का प्रयोग 3. सङ्.ख्या – एकतः शतं यावत्। (ब) अनुवाद कौशल संस्कृत सम्भाषण एवं अनुवाद पर आधारित परियोजना कार्य / मौखिकी परीक्षा के आधार पर मूल्याङ्.कन।	

सार बिंदु (की वर्ड) / टैगः वेद,संज्ञा,सन्धि,कारक,अनुवाद,अव्यय,सम्भाषण।		
# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		

Text Book(s) / Reference Books

1. ऋग्वेद – संहिता, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. यर्जुर्वेद – संहिता, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
3. सामवेद संहिता, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
4. अथर्ववेद – संहिता, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
5. वैदिक वांगमय का इतिहास, श्री रमाकांत शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. अभिनव वेद दीपिका, डॉ. रमाकांत पांडेय, जगदीश पुस्तकालय, जयपुर।
7. लघु सिद्धांत कौमुदी, भट्टो जी दीक्षित, भीमसेन शास्त्री भैमी प्रकाशन।
8. ''ऋक्सूक्त संग्रह'', झा, तारिणीश– प्रकाशन केन्द्र, रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ, 126007
9. ''वेद संचयनम्'', मिश्र, डॉ. यदुनंदन– चौखंभा विद्याभवन वाराणसी 1990
10. ''वाग्व्यवहारादर्श'',शास्त्री, चारूदेव – मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 1970
11. ''ऋक् सूक्त समुच्चय'', आचार्य, डॉ. रामकृष्ण – विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1983
12. ''लघु सिद्धान्त कौमुदी'', कुशवाहा, महेश सिंह – चौखंभा, सुरभारती वाराणसी, 1995
13. ''लघु सिद्धान्त कौमुदी'', चौधरी, रामविलास – मोतीलाल वनारसी दास, वाराणसी, 2013
14. ''प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी'' द्विवेदी, आचार्य कपिलदेव – वि.वि. प्रकाशन वाराणसी, 2001
15. ''अनुवाद चंद्रिका'', त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द – वि.वि. प्रकाशन वाराणसी, 2001
16. ''लघु सिद्धान्त कौमुदी'', गोविन्दाचार्य – चौखंभा, सुरभारती वाराणसी
17. ''ऋक्सूक्त संग्रह'',शास्त्री, डॉ. हरिदत्त – साहित्य भण्डार, मेरठ,1980

18.''वैदिक साहित्य का इतिहास'', उपाध्याय, आचार्य बलदेव–शारदा संस्थानम्, दुर्गा कुंज, वाराणसी
19.''रूप चंद्रिका'', त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2013
20.''संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास''द्विवेदी, आचार्य कपिलदेव–
21.रामनारायण लाल विजय कुमार, 2 कटरा रोड़ इलाहाबाद, 2013
22. ''भाषा प्रवेश'', प्रथम एवं द्वितीय भाग, संस्कृत भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
23.''विभक्तिवल्लरी'', – संस्कृत भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
24.कातंत्र व्याकरण शर्ववर्मकृत भावसेन त्रिविध, त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर मेरठ।

भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधियां:

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ: लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्याकन, साक्षात्कार विधि, वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ट प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण अधिकतम अकः 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंकः 40

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंकः 60

आंतरिक मूल्यांकनः सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) : 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट/ क्विज/ सेमीनार /प्रस्तुतीकरण/ (प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंकः 40	
आकलनः विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय– 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60	
कोई टिप्पणी/सुझाव :			

Course code	Aarsh Kavya & Laukik Kavya Paper-II/Major/Minor	L	T	P	C
23AISANS2T	आर्ष काव्य एवं लौकिक काव्य (प्रश्न पत्र 2)/मेजर/माईनर	06	0	0	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			

Semester – II

Level - 05

Course Objectives: (CO)

- विषय की व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- आर्षकाव्य एवं लौकिक काव्य की जानकारी प्रदान करना।
- नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होगा।
- रामायण की सार्वकालिक व सार्वजनिक उपादेयता के साथ राष्ट्र निर्माण में सहायक।
- भारतीय संस्कृति के अवबोध एवं महापुरूषों के आदर्श से छात्रों को परिचित कराना।
- प्राचीन सामाजिक संरचना एवं उत्कृष्ट समाज का ज्ञान होगा।

Course Learning Outcome: (CLO)

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- आर्षकाव्य एवं लौकिक काव्य के अध्ययन के प्रति जागरूक होना।
- रंग मंचीय कौशल के विकास व लेखन की कला की दृष्टि से उपादेय।
- छात्र में कथा लेखन की शैली का विकास होगा।
- उपदेशात्मक काव्य से नैतिक मूल्यों का विकास होगा।

Unit – 1 महाकाव्य एवं रामायण	**15**
महाकाव्य, खण्ड काव्य एवं नाटकों का उद्भव एवं विकास बाल्मीकि रामायण– बालकाण्ड – प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) पठितांश से व्याख्या तथा बाल्मीकि रामायण के सामान्य परिचय पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।	
Unit – 2 महाभारत	**15**
महाभारत शान्ति पर्व अध्याय–192, पठितांश से व्याख्या तथा महाभारत के सामान्य परिचय संबंधी समीक्षात्मक प्रश्न।	
Unit – 3 रघुवंशम्	**15**
प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) – पठितांश से व्याख्या तथा रघुवंश महाकाव्य के सामान्य परिचय संबंधी समीक्षात्मक प्रश्न।	
Unit – 4 स्वप्नवासवदत्तम्	**15**

प्रथम से तृतीय अंक– पठितांश से व्याख्या तथा सम्पूर्ण नाटक पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न।	
Unit – 5 नीति एवं हितोपदेश	15
हितोपदेश – (अ) मित्रलाभ – पठितांश पर आधारित उपदेशात्मक प्रश्न। (ब) नीतिशतकम् – (1 से 50 पद्य) अनुवाद / प्रश्न (स) सुनीतिशतकम् – सामान्य परिचय से संबंधित प्रश्न	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text Book(s) / Reference Books		

1. संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियॉं – डॉ.जयकिशन प्रसाद, खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. संस्कृत महाकाव्य की परम्परा – डॉ. केशवराम मुसलगॉंवकर, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
3. भारतीय साहित्य शास्त्र की रूपरेखा – डॉ.त्रयम्बक देश पाण्डे
4. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5. रघुवंशम् –महाकवि कालिदास, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
6. "बाल्मीकि रामायण" बालकाण्ड, दवे डॉ. समीक्षा – महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा
7. "महाभारत– शान्तिपूर्ण", सम्पादक– गीता प्रेस गोरखपुर, उत्तरप्रदेश
8. "रघुवंशम्"– प्रथम सर्ग, त्रिपाठी डॉ. कृष्ण मणि – चौखंभा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,2012
9. "रघुवंशम्" – प्रथम सर्ग,शर्मा रेग्मी पंडित शेषराज – चौखंभा, संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2009
10. "स्वप्नवासवदत्तम्". झा डॉ. तारिणीश– रामनारायण बैनीमाधव इलाहाबाद 1973
11. "स्वप्नवासवदत्तम्" चतुर्वेदी वासुदेव कृष्ण – महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा
12. "हितोपदेश मित्रलाभ", नारायण पंडित – धर्म नीराजना प्रकाशन दिल्ली 2004
13. "संस्कृत सुकवि समीक्षा", उपाध्याय आचार्य बलदेव, शारदा प्रकाशन, वाराणसी
14. "संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास", त्रिपाठी डॉ. राधावल्लभ– वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी 2001
15. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", उपाध्याय आचार्य बलदेव –शारदा निकेतन, वाराणसी 1970
16. "नीतिशतकम्" मुसलगांवकर राजेश्वर शास्त्री – चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी 2014
17. "सुनीतिशतकम्", आचार्य विद्यासागर धर्मोदय प्रकाशन सागर
18. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", मिश्र आचार्य रामचन्द्र – चौखंम्भा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
19. "रघुवंशम् प्रथम सर्ग", झा तारणीश– प्रकाशन केन्द्र लखनऊ
20. वैदिक साहित्य समुच्चय डॉ. आशीष कुमार जैन अस्तित्व प्रकाशन बिलासपुर

भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधिया

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँः लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंकः 40

विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 60

आंतरिक मूल्यांकन : सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE): 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट / क्विज / सेमीनार /प्रस्तुतीकरण / (प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंक 40
	असाइनमेंट / प्रस्तुतीकरण	
आकलनः विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय– 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60
कोई टिप्पणी / सुझाव		